ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):400-406

व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020: एक अध्ययन

विनीत कुमार मिश्र और अच्युत कुमार यादव

शिक्षा-संकाय, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
कोटवाँ, जमुनीपुर-दुबावल, प्रयागराज (उ0प्र0)
Email: rahulmishra7374@gmail.com

Received: 27.08.2025 *Revised: 12.10.2025* *Accepted:18.12.2025*

सारांश

व्यावसायिक शिक्षा हमारे भारतीय शिक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणादायक स्रोत है। भारतीय शिक्षा को सन्दर्भ को बदलने में व्यावसायिक शिक्षा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण का कार्यक्रम 1976 में आरम्भ किया गया। व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को नियोजित तथा कार्यान्वित करने में किये जाने वाले विभिन्न कार्यों, उत्तर प्राथमिक, उत्तर माध्यमिक एवं उत्तरउच्चतर माध्यमिक स्तरों में - अपेक्षित परिवर्तनों के अनुरूप क्रियान्वयन को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि एक प्रभावशाली प्रबन्धन पद्धति संगठित की जाये। इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रों की प्रगति, विकास और साख का मूल आधार उनकी ज्ञान संपदा ही होगी। यह आधार जितना सशक्त, समेकित, जगह तथा परिवर्तनों के प्रति सतर्क और गतिशील होगा, राष्ट्र की प्रगति में नागरिकों की भागीदारी भी उतनी ही विस्तृत और सर्वव्यापी होगी। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए भारत की प्राथमिक आवश्यकता हर व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण तथा उपयोगी कौशलों की ग्राह्यता से परिपूर्ण शिक्षा पहुँचाने की होगी। ऐसे में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 देश के लिए सकारात्मक संभावनाओं के द्वार खोलती है। व्यावसायिक शिक्षा कक्षा 6 से प्रारम्भ की जाये तथा चरणबद्ध तरीके से हायर सेकेण्डरी तक जारी रखी जाये। एनईपी का लक्ष्य स्कूली पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना है, जो छात्रों को व्यावहारिक कौशल और ज्ञान प्राप्त करने और उनकी रोजगार क्षमता में सुधार करने में मदद करेगा।

मुख्य शब्द- *व्यावसायिक शिक्षा, एनपीई 1986, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*

प्रस्तावना-

व्यावसायिक शिक्षा हमारे भारतीय शिक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणादायक स्रोत है। भारतीय शिक्षा को सन्दर्भ को बदलने में व्यावसायिक शिक्षा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण का कार्यक्रम 1976 में आरम्भ किया गया। परन्तु शिक्षा के व्यावसायीकरण की योजना ने अभी गति नहीं पकड़ी है। इस धीमी प्रगति के बहुत से कारण है - अच्छी समन्वित प्रबन्ध पद्धति की कमी -जैसे, व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त लोगों के लिए बेरोजगारी, माँग एवं आपूर्ति में सामंजस्य न होना, समाज द्वारा इस अवधारणा को स्वीकार करने की अनिच्छा, अतः व्यावसायिक शिक्षा पद्धति को सुदृढ़ बनाने के लिए तत्काल कदम उठाना अति आवश्यक है।

व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों को नियोजित तथा कार्यान्वित करने में किये जाने वाले विभिन्न कार्यों, उत्तर प्राथमिक, उत्तर माध्यमिक एवं उत्तर उच्चतर माध्यमिक स्तरों में- अपेक्षित परिवर्तनों के अनुरूप क्रियान्वयन को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि एक प्रभावशाली प्रबन्धन पद्धति संगठित की जाये। व्यावसायिक शिक्षा छात्रों को प्रदान की जाने वाली वह शिक्षा है जिससे छात्र अपनी$2 की शिक्षा पूरी करने के बाद वास्तविक जीवन में प्रवेश के लिए तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किसी व्यवसाय या रोजगार को अपना सकें तथा धन अर्जित कर सकें।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक वृद्धि एवं उनके रोजगार में उन्नति के अवसरों की कमी। व्यावसायिक शिक्षा के विरूद्ध धारण किये गये पूर्वाग्रह तब तक दूर नही होगें जब तक माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को लाभप्रद रोजगार के उचित अवसर अथवा शिक्षा व्यावसायिक या सामान्य कार्यक्रमों में आगे जाने की सुविधाएँ प्रदान नहीं की जायेंगी। ऐसे कार्यक्रमों में डिप्लोमा विशेष डिग्री पाठ्यक्रम, व्यावसायिक डिग्री पाठ्यक्रमों को शामिल किया जा सकता है।

इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रों की प्रगति, विकास और साख का मूल आधार उनकी ज्ञान संपदा ही होगी। यह आधार जितना सशक्त, समेकित, जगह तथा परिवर्तनों के प्रति सतर्क और गतिशील होगा, राष्ट्र की प्रगति में नागरिकों की भागीदारी भी उतनी ही विस्तृत और सर्वव्यापी होगी। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए भारत की प्राथमिक आवश्यकता हर व्यक्ति तक गुणवत्तापूर्ण तथा उपयोगी कौशलों की ग्राह्यता से परिपूर्ण शिक्षा पहुँचाने की होगी। ऐसे में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 देश के लिए सकारात्मक संभावनाओं के द्वार खोलती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आधार सिद्धान्त का वर्णन शिक्षा के व्यापक एवं बहुआयामी महत्त्व को रेखांकित करता है। इसके अनुसार 'शैक्षिक प्रणाली का मुख्य उद्देश्य अच्छे इंसान का विकास करना हैविचार और कार्य करने में सक्षम हो जो तर्क संगत -, जिसमें करुणा एवं सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतना और रचनात्मक कल्पना शक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों। इसका उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है, जो कि अपने संविधान द्वारा परिकल्पितमाज के निर्माण में बेहतर तरीके से समावेशी और बहुलतावादी स-

योगदान करे। इसमें आगे यह भी कहा गया है कि हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना होगा। निश्चित रूप से इस हेतु शिक्षकों और अभिभावकों को तैयार किया जायेगा। इस शिक्षा नीति का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है, जो राष्ट्र की शैक्षिक आवश्यकता और शिक्षा के समावेशी चरित को आगे बढ़ा सके। शिक्षा के अन्तर्गत उसकी सर्वसुलभता, सक्षमता निर्माण, कौशल विकास तथा गुणवत्ता का तत्त्व समाहित हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में व्यावसायिक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में व्यावसायिक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए निम्न प्रावधान किये गये हैं-

- 5 प्रतिशत से भी कम भारतीय कार्यबल ने औपचारिक अवकाश शिक्षा प्राप्त की है। इसलिए इस प्रतिशत को बढ़ाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा संरचना को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि एक राष्ट्र के रूप में हम अधिक उन्नत और विकासशील देशों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकें और इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा आवश्यक है।

- चरणबद्ध तरीके से व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करना, जिसमें मध्य और माध्यमिक विद्यालय में कम उम्र में व्यावसायिक प्रदर्शन की शुरुआत शामिल है। एनईपी पैरा)16.4)।

- कक्षा 6 से शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूक करने का प्रावधान किया गया है ताकि व्यवसाय के प्रति सही धारणा और दृष्टिकोण विकसित हो सके। आप कह सकते हैं कि यह व्यावसायिक शिक्षा से जुड़ी सामाजिक स्थिति के पदानुक्रम को दूर करने के लिए किया गया प्रयास है।

- द्वितीय .2025 तक, स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिशत शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव होगा, जिसके लिए लक्ष्य और समयसीमा के साथ एक स्पष्ट कार्य योजना विकसित की जाएगी पैरा)16.5)। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए माध्यमिक शिक्षा संस्थान तकनीकी संस्थानों जैसे आईटीआई पॉलिटेक्निक, कुछ स्थानीय उद्योगों आदि के साथ सहयोग करेंगे। इन कदमों से छात्र व्यवसाय के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे और किसी विशेष व्यवसाय के प्रति अपने कौशल और रुचि विकसित करने में सक्षम होंगे और इसमें महारत हासिल कर सकेंगे।

- श्लोक विद्या- यानी भारत में विकसित महत्वपूर्ण व्यावसायिक ज्ञान को व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में एकीकरण के माध्यम से छात्रों के लिए सुलभ बनाया जाएगा। (एनईपी पैरा

16.5)। हमारी संस्कृति से दिन-ब-दिन लुप्त होती जा रही लोकविद्या को कायम रखने के लिए विद्यार्थियों तक पहुंचाने की जरूरत है और इसी उद्देश्य से विभिन्न स्थानीय विशेषज्ञों की पहचान की जाएगी और उनके तहत विद्यार्थियों को इंटर्नशिप प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसमें इंटर्नशिप कार्यक्रम का औपचारिक और अनौपचारिक तरीका होगा। स्थानीय व्यावसायिक शिल्पों की पहचान की जाएगी और छात्र उनके शिल्पों का पता लगाएंगे और इन स्वदेशी प्रथाओं के बारे में इंटर्नशिप आयोजित की जाएगी। उनकी कई प्रथाएं हैं जो अनोखी हैं और केवल भारत में ही प्रचलित हैं। इन कलाओं और प्रथाओं को संरक्षित करने के प्रयास किए जाने चाहिए और इसमें कम उम्र में इंटर्नशिप मददगार हो सकती है।व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम को केवल नियमित स्कूली शिक्षा तक सीमित नहीं किया जा सकता है, बल्कि ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पेशकश भी की जानी चाहिए ताकि प्रत्येक शिक्षार्थी अपने कौशल विकसित कर सकें और अपने वांछित लक्ष्यों को पूरा कर सकें।

- व्यावसायिक शिक्षा को अगले दशक में चरणबद्ध तरीके से सभी स्कूल और उच्च शिक्षा संस्थानों में एकीकृत किया जाएगा। व्यावसायिक शिक्षा के लिए फोकस क्षेत्रों को कौशल अंतर विश्लेषण और स्थानीय अवसरों के मानचित्रण के आधार पर चुना जाएगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय इस प्रयास की निगरानी के (शिक्षा मंत्रालय का नाम बदला गया) का (एनसीआईवीई) ए एक राष्ट्रीय समितिलिए व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के लि गठन करेगा, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा के विशेषज्ञ और उद्योग के सहयोग से सभी मंत्रालयों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। एनईपी पैरा)16.6)। छात्रों को सूचित करियर विकल्प चुनने में मार्गदर्शन के लिए आठवीं कक्षा में व्यावसायिक रुचि सूची और दसवीं कक्षा में कौशल आधारित योग्यता परीक्षण की शुरूआत। इससे छात्रों को सही करियर (एसबीएटी) विकल्प चुनने में मदद मिलेगी और उन्हें उनके कौशल और रुचि के अनुसार निर्देशित किया जाएगा।

एनईपी 1986 एवं 2020 में व्यावसायिक शिक्षा-

- एनपीई 1986 को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक शिक्षा एक दूर की धारा होगी जिसका उद्देश्य बच्चों को गतिविधि के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न व्यवसायों के लिए तैयार करना है। वोकेशनल कोर्स 2 चरणों से शुरू किये जायेंगेलेकिन ., इन्हें आठवीं कक्षा के बाद भी प्रदान किया जा सकता है। एनईपी 2020 में कक्षा 6 से शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूक करने का प्रावधान किया गया है ताकि व्यवसाय के प्रति सही धारणा और दृष्टिकोण विकसित हो सके।

- एनपीई 1986 में पाठ्यचर्या और पाठ्येतर तथा व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं के बीच अलगाव है। एनईपी 2020 में सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बीच हानिकारक पदानुक्रम और साइलो को खत्म करने के लिए कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं आदि के बीच कोई कठोर अलगाव नहीं है।

- एनईपी 1986 में वंचित वर्ग, महिलाओं, विकलांगों और ग्रामीण छात्रों को न्याय दिलाने के प्रावधान के साथ व्यावसायिक संस्थानों की स्थापना के लिए भी प्रयास किए गए हैं। एनईपी में देश के सभी बच्चों के लिए प्री से लेकर स्कूल-12वीं कक्षा तक व्यावसायिक शिक्षा सहित गुणवत्तापूर्ण समग्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करने और अवसर प्रदान करने के लिए एक ठोस राष्ट्रीय प्रयास किया जाएगा।

- 1986 की गैरऔपचारिक-, लचीली और आवश्यकता आधारित व्यावसायिक कार्यक्रमों-साक्षरों-की नीति को नव, प्राथमिक शिक्षा पूरी कर चुके युवाओं, स्कूल छोड़ने वालों और काम में लगे व्यक्तियों और बेरोजगार या आंशिक रूप से नियोजित व्यक्तियों के लिए भी उपलब्ध कराया जाएगा। नई नीति में माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण को उचित महत्व दिया गया है और इसलिए उन बच्चों के लिए कोई प्रावधान नहीं है जो स्कूल से बाहर हैं।

- उन युवाओं के लिए तृतीयक स्तर के पाठ्यक्रम आयोजित किए जाएंगे जो शैक्षणिक स्ट्रीम के उच्चतर माध्यमिक चरण को पूरा करते हैं और उन्हें व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की आवश्यकता हो सकती है। यह प्रस्तावित है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में 1990 तक 10 प्रतिशत उच्च माध्यमिक छात्रों और 1995 तक 25 प्रतिशत को शामिल किया जाएगा। पाठ्यक्रमों के उत्पादों के पर्याप्त रोजगार के लिए कदम उठाए जाएंगे। पाठ्यक्रमों की नियमित समीक्षा की जायेगी। 2025 तक, स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50% शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव होगा। मध्य और माध्यमिक विद्यालय में शुरुआती उम्र में व्यावसायिक प्रदर्शन से शुरुआत करके, गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक शिक्षा को उच्च शिक्षा में सुचारू रूप से एकीकृत किया जाएगा। अगले दशक में चरणबद्ध तरीके से सभी माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक पेशकशों में व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत किया जाएगा।

- 2020 की नीति में छात्रों को अध्ययन के लिए विषयों की अधिक लचीलापन और पसंद दी जाएगी, विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालय में जिसमें शारीरिक शिक्षा -, कला और शिल्प, और व्यावसायिक कौशल के विषय शामिल हैं ताकि वे अध्ययन और जीवन योजनाओं - के अपने रास्ते खुद डिजाइन कर सकें, लेकिन नीति 1986 में बच्चों को अधिक लचीलापन

प्रदान नहीं किया गया है।

- एनईपी 2020 में 'लोकविद्या' यानी भारत में विकसित महत्वपूर्ण व्यावसायिक ज्ञान को व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में एकीकृत करके छात्रों के लिए सुलभ बनाया जाएगा, लेकिन 1986 की नीति में इसे ज्यादा महत्व नहीं दिया गया है।

परिणाम

व्यावसायिक शिक्षा कक्षा 6 से प्रारम्भ की जाये तथा चरणबद्ध तरीके से हायर सेकेण्डरी तक जारी रखी जाये। एनईपी का लक्ष्य स्कूली पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना है, जो छात्रों को व्यावहारिक कौशल और ज्ञान प्राप्त करने और उनकी रोजगार क्षमता में सुधार करने में मदद करेगा।

सुझाव

हम यह आशा करते हैं कि उक्त सुझाव राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समझने में लोगों की मदद करेगा। साथ ही इससे देश में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कार्य एवं सुझावों की प्राथमिकता तय करने में सहायता मिलेगी। इसके अतिरिक्त इस नयी शिक्षा नीति की अनुसंशाए व्यावसायिक शिक्षा के बेहतर संचालन में मदद करेंगी और मेरा यह मानना है कि यह सिफारिशें देश में व्यावसायिक शिक्षा को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेंगी। मुझे पूरा विश्वास है कि बेहतर रणनीति, निगरानी और दूरदर्शी योजना बनाकर हम आने वाले समय में व्यावसायिक शिक्षा को प्रभावी रूप से संचालित कर सकेंगें। व्यावसायिक शिक्षा आने वाली इक्कीसवीं सदी में देश की सबसे ज्यादा मदद करेगी और आवश्यकता इस बात की भी है कि हम सभी एक साथ आये और देश में व्यावसायिक शिक्षा के ढाँचे को मजबूत करने का कार्य करें ।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

- इंडिया सर्वे इन हायर एजुकेशन, (2019). उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- कुमार, प्रकाश :21वीं सदी की मांग पूरी करेगी राष्ट्रीय शिक्षा नीति आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020।
- कुरैन, अजय, चन्द्रमना, बी, सुदीप दिसंबर)2020). इंपैक्ट आफ न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 ऑन हायर एजुकेशन,
- गावहने, प्रोण्य डॉक्टर, सुधीर)2021). इंडियास न्यू एजुकेशन पॉलिसी-2020: ए क्रिटिकल अप्रिकलआर.जी.एम ., यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन महाराष्ट्र
- गंगवाल, सुभाष राष्ट्रीय शिक्षा नीति :21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला, दैनिक नव

ज्योति, पृष्ठ संख्या 4 22 अगस्त 2020।

- परिहार, प्रेम नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति :2020 संभावनाएं एवं चुनौतियां, इंटरनेशनल जर्नल आफ अप्लाइड रिसर्च, 17 अगस्त 2020।
- मीना एवं मोनिका शर्मा)2020). नए भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, हंस शोध शुधा, वॉल्यूम 1 पृष्ठ संख्या 59 से 62
- शर्मा, के0 एल0: दैनिक भास्कर, जयपुर संस्करण, पृष्ठ संख्या .2, 24 अगस्त 2020।

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.